मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

उलझाते इम्तहान	3
किसकी आजादी	4
बदनाम मोदी का सहारा	5
'आयुष्मान' का पांखड	8

वर्ष 31 | अंक -34 | फ़रीदाबाद | 19-25 अगस्त 2018 | फोन : - 9999595632 | ₹2.50

अटल से भी जो नहीं टला

अटल बिहारी वाजपेयी (1924-2018) को युग पुरुष घोषित करने की होड़ के बीच उनका एक सरसरी सम्यक मूल्यांकन भी संभव है। उनके 1998-2004 के प्रधानमन्त्री के अंतिम एक वर्ष को छोड़कर मुझे उनकी सुरक्षा एजेंसी, एसपीजी में काम करने का मौका मिला। सुरक्षाकर्मियों के लिए वाजपेयी स्वयं मृदुभाषी और सहज रहे; नखरे दिखाने को दामाद रंजन भट्टाचार्य और कभी झल्लाने के लिए मंत्री प्रमोद महाजन होते थे। सुरक्षा घेरे के लिए मोदी को दूर रखने के इशारे थे।

प्रधानमंत्री वाजपेयी के कार्यकाल में एनरान और यूटीआई घोटाले; परमाणु बम विस्फोट का रणनीतिक आत्मघात; ग्रैहम स्टेंस जैसा हिंदुत्व धर्म परिवर्तन केन्द्रित कांड; कश्मीर पहल, लाहौर बस यात्रा, कारगिल युद्ध, मुशर्रफ आगरा शिखर वार्ता जैसे जमीनी पाकिस्तान सन्देश; संसद पर अपमानजनक हमला; सफल कारोबारी क्लिंटन शिखर वार्ता; जनविरोधी विनिवेश और टोल हाई वे पालिसी; आडवाणी से तनाव; गुजरात संहार का धक्का और राज धर्म सलाह की गूंज के साथ शाइनिंग इंडिया से साक्षात्कार और शासन पर दामाद की जकड़ से भी इत्तेफाक हुआ। आडवाणी ने प्रधानमन्त्री अमले में अपना 'गुर्गा' सुधीन्द्र कुलकर्णी घुसा रखा था और दामाद के साथ एक न्यूनतम राशि उद्धृत किये जाने का चलन था।

बेहद हास्यास्पद होता जब राजीव गाँधी की नकल में वाजपेयी के जन्म दिन-नव वर्ष धमाल आयोजित किये जाते। केरल के कुमारकम में तो दिन गुजरने मुश्किल हो गए। वैसे उन्हें स्वयं खुशी मनाली के घर पर पहाड़ों की धूप में वक्त बिता कर ही होती। वहां रची गयी सतही कविताई पर उस दौर के हर भाजपायी भक्त और बौद्धिक चाटुकार को नाज करते देखा जा सकता था।

जैसा भोजन प्रेम उनका था शायद वे ताऊ देवी लाल को भी पिछाड़ देते। विदेशों में औपचारिक रात्रि भोज की शाम कभी-कभी आप उन्हें तीन बार डिनर करते पा सकते थे। और फिर आधी रात में पाचक दवाएं लेते भी। इस लिए वजन पर नियंत्रण नहीं था और इस लिए दोनों घुटने बदलवाने पड़े। चलने में दर्द इस कदर बढ़ गया था कि न्यूयॉर्क में पहली बार व्हील चेयर दी गयी तो खुशी-खुशी बैठ गए और इस अनुभव के चलते काफी समय गोल्फ कार्ट के सहारे गुजरा।

प्रधानमन्त्री के रूप में भी उनकी हाजिर जवाबी और श्रोताओं को बांधने की कला के तो सभी कायल होंगे। राष्ट्रपति क्लिंटन के साथ व्हाइट हाउस में समां बंध गया जब वाजपेयी ने कोलंबस वाली टिप्पणी की- कहीं गलती से कोलंबस ने बजाय अमेरिका के भारत को खोज निकाला होता तो आज हम भारतीय कहाँ होते!

लेकिन अटल के व्यक्तित्व में गहन प्रेम का पक्ष प्राय: चर्चा में नहीं लाया गया। हालाँकि, वे इस मामले में पूर्व प्रधानमन्त्री चंद्रशेखर की तरह 'लाउड' कभी नहीं हुये। मीडिया की चुप्पी ने भी इस ब्रम्हचारी की 'नैतिक' कवायद में पूरा साथ दिया।

2004 में वाजपेयी की हार को गुजरात संहार और यूटीआई घोटाले ने संभव किया था। कहीं तब गुजरात की मोदी सरकार बर्खास्त कर दी गयी होती, और यूटीआई घोटाले में तो शाइनिंग इंडिया के कट्टर समर्थक मध्य वर्ग का ही पैसा डूबा था! अटल भी इस कर्म फल को टाल नहीं सके- मोदी को बचाने में संघ ने आडवाणी को आगे कर दिया और यूटीआई में दामाद रंजन का नाम उछलने पर स्वयं वाजपेयी ने इस्तीफे की धमकी दे डाली।

अटल के लिए मोदी राजनीतिक उद्दंड रहे लेकिन चुनौती नहीं। मोदी के लिए अटल हमेशा राजनीतिक चुनौती का आदर्श बने रहेंगे। यह भी स्पष्ट है, न वक्तृता और विश्वसनीयता में और न स्वीकार्यता में मोदी को अटल के समकक्ष रखा जायेगा। इसलिए, अटल को श्रद्धांजलि के अवसर पर, 2019 के नतीजों का सूत्र भी 2004 चुनाव के सन्दर्भ में तलाशा जा सकता है। जो 'पप्पू' तब मुकाबले में था, वही आज भी है। जब भारतीय वोटर अटल को पीट सकता है, मोदी को क्यों नहीं?

- विकास नारायण राय

आलोचना और समीक्षा से परे कोई नहीं

अटल बिहारी वाजपेयी जब नहीं है, तब ढेर सारी बातों के अलावा इन वजहों से भी वे याद रखे जाएंगे-

1. **आजाद भारत में पहली बार इनके प्रधानमंत्री रहने के दौरान सरकारी कंपनियों को बेचने के लिए अलग से एक मंत्रालय बना और धड़ाधड़ कंपनियां बेची गई। कंपनी बिकते ही रिजर्वेशन खत्म।**
2. **इनके समय संविधान बदलने के लिए पहली बार संविधान समीक्षा आयोग बना। लेकिन बदल नहीं पाए। विरोध हो गया।**
3. **इनके समय में भारत ने पाकिस्तान से पहली बार भारत भूमि में लड़ाई लड़ी। पाकिस्तानी पुरानी स्थिति में लौट गए तो उसे जीत बताया गया। सैकड़ों सैनिक शहीद हो गए।**
4. **प्रमोशन में आरक्षण खत्म होने की शुरूआत इनके समय हुई।**
5. **भारत का एक भीषणतम दंगा हुआ, कई दिनों तक चला। कोई कार्रवाई नहीं की। दुखी थे।**
6. **बाबरी मस्जिद गिरने पर चुप रहे। दुखी थे। कुछ बोल नहीं पाए।**
7. **इनके समय में खूंखार आतंकवादियों को रिहा करने के लिए केंद्रीय मंत्री कंधार तक गए थे।**
8. **पुरानी पेंशन स्कीम इनके समय खत्म की गई।**
9. **जाति जनगणना कराने के एच. डी. देवेगौड़ा सरकार के फैसले को बदल दिया। आडवाणी तब गृह मंत्री थे।**

अटलजी को भांग का शौक था, नेहरू को नहीं

अटल ईश्वरीय शक्ति में विश्वास रखते थे, नेहरू मनुष्य की शक्ति में, नेहरू धर्मनिरपेक्ष थे, अटलजी हिंदुत्व पंथी, अटलजी शाखा में बड़े हुए नेहरू स्वाधीनता संग्राम में भाग लेते हुए, नेहरू अनेक बार आजादी की जंग में जेल गए, वर्षों सजा काटी, अटलजी स्वाधीनता संग्राम में मुखबिर थे, कभी जंग नहीं लड़ी। अटलजी हिंदी बोलते, नेहरु हिंदुस्तानी बोलते। नेहरू ने कभी उसूल और दल नहीं बदले, अटलजी पहले आरएसएस में रहे, फिर जनसंघ, जनता पार्टी, भाजपा, पहले हिंदुत्ववादी फिर लिबरल फिर गांधीवादी समाजवादी। इसके अलावा लेखन और वक्तृता में जमीन आसमान का अंतर था। इसलिए कृपया अटलजी को नेहरू की परंपरा में न रखें, अटलजी दक्षिणपंथी लिबरल थे, नेहरु लिबरल-वामपंथी थे।

- जगदीश्वर चतुर्वेदी

15 अगस्त का शो खराब न हो इसलिए घोषणा नहीं की गयी

ताकि मोदी जी का जमा जमाया खेल न बिगड़ जाए, जमाए गए रंग में भंग न पड़ जाए। अब मीडिया पर भाजपा की तगड़ी ब्रांडिंग की जा रही है , पूरी तरह से मौका दिया जा रहा है कि महामृत्युंजय का जाप करते, पूजा पाठ हवन आहुति देते, जबरन दुखी होते भाजपाइयों को दिखाया जा सके, दिन भर से एंकर अटल की कविताएं पढ़-पढ़ कर हैरान हो रहे हैं।

किसी भी चैनल को अब मोदी को राजधर्म की याद दिलाने वाले अटल का स्मरण नही है, राजधर्म याद दिलाया तो चैनलों की जेब नोटो से कौन भरेगा? आखिर शो मस्ट गो ऑन की थीम है मरते वक्त भी अटल बिहारी को मोदी जी पूरी तरह से यूज कर रहे हैं, उनकी ये कला विलक्षण है।

वैसे नरेन्द्र मोदी की तुलना में अटल बिहारी का व्यक्तित्व बहुत शालीन था गलतियां तो उन्होंने भी बहुत की है लेकिन फिर भी इनकी तरह दंभी नही थे , उनके समय कम से कम विरोध के स्वरों को भी आदर दिया जाता था जब तक वह अटल बिहारी थे तभी तक भाजपा थी.....अटल बिहारी को श्रद्धांजलि दे रहे हैं तो साथ उस भाजपा को भी श्रध्दांजलि दे दें।

- गिरीश मालवीय